दक्षिण पंथी वर्चस्व का मुकाबला करना

लेखक-अजय गुडावर्ती (एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीतिक अध्ययन केंद्र, जेएनयू)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-I (भारतीय समाज) संबंधित है।

द हिन्दू

13 अगस्त, 2019

संस्कृति का उपयोग करके पिछड़े लोगों के बीच गहरी एकजुटता को बढ़ावा देकर इससे (दक्षिणपंथी वर्चस्व) लड़ा जा सकता है।

भारत ने हिंदू दक्षिणपंथी उदय को केवल राजनीतिक ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक ताकत के रूप में भी उभरते हुए देखा है। इसे सामरिक पहल की एक श्रृंखला द्वारा संभव बनाया गया है, जिसने पारंपरिक जातियों और वर्गों के साथ सत्ता के एकीकरण की अनुमति दी है।

दक्षिणपंथी सूक्ष्म स्तर के सामाजिक संघर्षों का दोहन और विस्तार करके ऐसा करने में कामयाबी हासिल की है जो एक बहु-स्तरीय पदानुक्रम बनाने के संदर्भ में निष्क्रिय है और पारंपरिक शक्ति की पकड़ को मजबूत करता है। इसने निचले छोर के सामाजिक समूहों, जिन्होंने कुछ हद तक सामाजिक शक्ति अर्जित कर ली है, के प्रतिरोध को कमजोर करके उन्हें अलग-थलग कर दिया है और कमजोर सामाजिक समूहों के प्रतिरोध और गतिशीलता को कम करने के लिए अंतर-धार्मिक और अंतर-क्षेत्रीय मतभेदों को स्वयं को स्पष्ट करने की अनुमति दी है। दक्षिणपंथी, न्याय और शक्ति के नाम पर ऐसे समूहों के अधिकार को नकारता है चाहे वे कमजोर और उपेक्षित ही क्यों न हों।

जाति के संदर्भ में, अब यह सर्वविदित है कि दक्षिणपंथियों ने दलित उप-जातियों को तोड़ने और अंतर-उप-जाति तनावों तथा आपसी पूर्वाग्रहों का पूरी तरह से शोषण करने के संदर्भ में महत्वपूर्ण प्रगति की है।

दैनिक पूर्वाग्रह

इसी तरह, इन्होने यादवों और कुर्मियों जैसे प्रमुख संख्या वाले ओबीसी समूहों के खिलाफ अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) समूहों जैसी कम संख्या वाली भीड़ को जुटाने में भी सफलता पायी है। इससे ओबीसी और दलितों के बीच संघर्ष और तेज हो रहा है। इसके अलावा, ये प्रमुख राजपूत जाति को दलितों के खिलाफ हिंसा और मॉब लिंचिंग की अनुमति देकर उन दलितों के खिलाफ अपना गुस्सा निकालने की अनुमति दे रहे हैं, जिन्होंने अब तक ज्यादा कुछ अर्जित नहीं किया है।

यह एक छोर पर प्रमुख जातियों की सामाजिक शक्ति को मजबूत कर रहा है और दूसरे छोर पर पिछड़ी जातियों की उप-जातियों की कम संख्या के माध्यम से इसे टुकड़े-टुकड़े कर रहा है। यह निष्क्रिय पूर्वाग्रहों को बढ़ावा दे रहा है, जो लंबे समय से पिछड़ी जातियों, जाति और धर्म एवं धर्म तथा क्षेत्र के बीच मौजूद हैं।

वास्तव में, बी.आर. अम्बेडकर ने स्वयं ओबीसी को सवर्णों के रूप में पहचाना था और कभी-कभी आर्यों के साथ उनकी बराबरी की थी। यह फिर से उत्तर और दक्षिण के बीच क्षेत्रीय गतिशीलता के साथ जटिल तरीकों से टकराता है। इस जटिल मैट्रिक्स में ओबीसी का स्थान क्या है यह ऐतिहासिक रूप से बहुत स्पष्ट नहीं है और राजनीतिक रूप से मंडल आयोग के लागू होने के बाद उन्हें जिस तरह की गतिशीलता मिली है, उससे केवल मतभेदों में तेजी आई है। ओबीसी द्वारा दलितों के खिलाफ हिंसक हमले

भारतीय राजनीति के कम चर्चा वाले पहलू रहे हैं। महाराष्ट्र में ओबीसी के रूप में सूचीबद्ध कुनबियों द्वारा दलितों के खिलाफ खैरलानजी घटना सबसे हालिया हमला था।

अल्पसंख्यक धर्म के भीतर, जिसमें मुस्लिम भी शामिल हैं, जाति, संप्रदाय और अन्य भेदभाव के शिकार हैं। उदाहरण के लिए, कश्मीर में, सुन्नियों और शियाओं के बीच, घाटी के सुन्नियों के बीच और पुंछ एवं राजौरी के सीमावर्ती क्षेत्रों में तथा लद्दाख में रहने वालों के बीच काफी मतभेद हैं। वे न तो अंतर-विवाह करते हैं और न ही सौहार्द्रपूर्ण संबंधों को बढ़ावा देते हैं। वर्ग और क्षेत्रीय पूर्वाग्रह संप्रदाय और जाति के साथ अक्सर टकराते रहते हैं।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा), राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, के नेतृत्व वाला वर्चस्व भय, धमकी, मीडिया पर नियंत्रण और संस्थानों को अस्थिर करने के बावजूद यह टॉप टू बॉटम प्रक्रिया की स्थिति में नहीं है। वर्तमान विस्तार ऐतिहासिक रूप से मौजूद सभी सांस्कृतिक विरोधाभासों को बाहर ले आया है। जहाँ कांग्रेस के समावेशी राष्ट्रवाद ने सामाजिक पूर्वाग्रहों को दूर किए बिना सामाजिक समूहों को राजनीतिक रूप से समायोजित करने का प्रयास किया है, वहीं भाजपा का राष्ट्रीयतावाद उनमें राजनीतिक रूप से शामिल है, लेकिन उन्हें सामाजिक रूप से विभाजित करता है। यहाँ विभाजन पहले से ही मौजूद थे; दक्षिण पंथियों ने केवल उन्हें विस्तृत कर दिया है।

एक नई भीड़

दक्षिणपंथी के खिलाफ लड़ाई, केवल पिछड़ी जातियों को एकजुट किए बिना और अपनी रणनीतियों की समीक्षा पर ही केंद्रित रही है। सहभोज और अंतर-विवाह को प्रोत्साहित करते हुए, पूर्वाग्रहों से लड़ने का एक मजबूत सांस्कृतिक कार्यक्रम होना चाहिए। केवल सहिष्णुता ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक भिन्नताओं के सकारात्मक उत्सव की भी आवश्यकता है। दक्षिण पंथी को हटाया जा सकता है या नहीं, यह मजबूत सांस्कृतिक कार्यक्रम पर निर्भर करता है। हालांकि, यह अभी स्पष्ट नहीं है कि इसके बारे में पहल कैसे करनी है। यह एक राजनीतिक लड़ाई से अधिक सांस्कृतिक के रूप में हो सकता है। यह मानवता से संबंधित होना चाहिए, शक्ति के बारे में नहीं।

एकजुटता की दिशा में हर कदम को उन समूहों की स्थिति को कम करने के रूप में भी माना जाता है जो सीढ़ी जैसी संरचना में सबसे ऊपर स्थित हैं, भले ही वे एक साथ प्रमुख समूहों द्वारा पीड़ित हों। दलितों में उप-विभाजन दलितों के भीतर अपेक्षाकृत उन्नति करने वाले जातियों को नीचे खींचने का कार्य करता है; ओबीसी में उप-विभाजन हिन्दुओं की पारंपरिक जातियों के वर्चस्व को प्रोत्साहित करता हैं।

महात्मा गांधी ने संघर्ष के बिना परिवर्तन का प्रयास किया है; हालांकि, वे तेजी से परिवर्तन की शुरूआत करने में विफल रहे हैं, लेकिन संघर्ष को खत्म करने की एक झलक पेश करने में सफलता पायी है। आज, हम संघर्ष के गवाह हैं, जहाँ परिवर्तन को गतिशीलता और पारंपरिक पदानुक्रमों को मजबूत करने के बीच नजरअंदाज कर दिया गया है। दक्षिण पंथी की आलोचना और चुनावी हार से काम चलने वाला नहीं है। जातियों, धार्मिक समूहों और क्षेत्रीय पहचानों को भीतर के पूर्वाग्रह पर काबू पाकर इसका मुकाबला करना चाहिए।

GS World
Committed To Excellence

दक्षिणपंथी और वामपंथी

- **दक्षिणपंथी:**- यह विचारधारा वामपन्थ के ठीक विपरीत है, जो विश्वास करती है धर्म में, राष्ट्र में और अपने धर्म से जुड़े रीति-रिवाजों में।
- इनकी खासियत यह है कि ये समाज की परम्परा, अपनी भाषा, जातीयता, अर्थव्यवस्था और धार्मिक पहचान को बढ़ाने की चेष्टा करते हैं।
- दक्षिणपंथी की यह धारणा है कि प्राकृतिक नियमों के साथ खिलवाड़ नहीं किया जाना चाहिए और समाज को आधुनिकता के अलावा अपने पुराने रिवाजों को साथ लेकर भी चलना चाहिये।
- **वामपंथी:**- इस विचारधारा का असल मलतब है समाज में पिछड़े लोगों को बराबरी पर लाना। यह विचारधारा धर्म , जाति, वर्ण , समुदाय , राष्ट्र और सीमा को नहीं मानती; इसका वास्तविक कार्य है पिछड़ते लोगों को एक साथ, एक मंच पर लाना।
- यह विचारधारा उन लोगों के प्रति सहानुभूति रखती है, जो किसी कारणवश समाज में पिछड़ गए हों, शक्तिहीन हो गए हों या उपेक्षा का शिकार हों। ऐसे में यह वामपंथी विचारधारा उन सभी पिछड़े लोगों की लड़ाई लड़ती है और उनको सामान अधिकार देने की मांग को रखती है।
- धर्मनिरपेक्षता भी इनका एक मुख्य बिंदु है।

पृष्ठभूमि

- 1779 में फ्रांस की नेशनल असेंबली दो धड़ों में बंट गई थी, जिनमें से एक लोकतांत्रिक व्यवस्था की मांग कर रहा था और दूसरा राजशाही के समर्थन में था।
- यह मांग जब आंदोलन का रूप लेने लगी, तो तत्कालीन सम्राट लुई-16 ने नेशनल असेंबली की एक बैठक बुलाई, जिसमें समाज के हर तबके के प्रतिनिधि शामिल हुए।
- इस बैठक में सम्राट के समर्थकों को सम्राट के दाईं और क्रांति के समर्थकों को बाईं ओर बैठने को कहा गया था।
- राजनीति में विचारधारा के आधार पर पहले औपचारिक बंटवारे की शुरुआत इसी बैठक व्यवस्था से मानी जाती है।
- तब राजशाही समर्थकों को दक्षिणपंथी (राइटिस्ट या राइट विंग) और विरोधियों के वामपंथी (लेफ्टिस्ट या लेफ्ट विंग) कहा गया था।

मुख्य बिंदु

- फ्रेंच नेशनल असेंबली में दाईं तरफ बैठने वाले लोग कुलीन, कारोबारी और धार्मिक तबके से थे, जबकि बाईं तरफ बैठने वाले ज्यादातर लोग आम नागरिक थे।
- यहाँ सम्राट के दाईं ओर बैठे यानी दक्षिण पंथ के लोग राजशाही के साथ-साथ स्थापित सामाजिक-आर्थिक परंपराओं के हिमायती थे।
- कुल मिलाकर ये अपनी संपत्ति और रसूख को कायम रखना चाहते थे, वहीं सम्राट के बाईं तरफ जुटे लोग यानी वामपंथी सामाजिक समानता और नागरिक अधिकारों की मांग कर रहे थे।
- यह भी एक वजह है कि दक्षिणपंथियों को पूंजीवादी और वामपंथियों को समाजवादी माना जाता है। दक्षिणपंथी चूंकि बदलावों के विरोधी थे, सो आगे चलकर ये कंजर्वेटिव और बदलाव के समर्थक वामपंथी प्रगतिवादी कहलाए।

Com

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. दक्षिणपंथी ऐसी विचारधारा है, जो विश्वास करती है धर्म में, राष्ट्र में और अपने धर्म से जुड़े रीति-रिवाजों में।
2. वामपंथी विचारधारा धर्म, जाति, वर्ण, समुदाय, राष्ट्र और सीमा को नहीं मानती। इसका वास्तविक उद्देश्य पिछड़ते लोगों को एक साथ, एक मंच पर लाना है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

Expected Questions (Prelims Exams)

1. Consider the following statements-

1. Rightwing thinking believes in religion, nation and tradition of its religions.
2. Leftist thinking does't believe in religion, caste, race, community, nation and boundary, its main objective is to bring backward people on a platform together.

Which of the above statements is/are correct?

(a) Only 1
(b) Only 2
(c) Both 1 and 2
(d) Neither 1 nor 2

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्नः दक्षिणपंथी विचारधारा से क्या अभिप्राय है? भारत में दक्षिणपंथी विचारधारा के विकास की परिस्थितियों की चर्चा कीजिए। (250 शब्द)

Q. What is meant by rightwing thinking? Discuss the conditions of development of right wing thinking in India. (250 Words)

नोट : 12 अगस्त को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (c) होगा।

Comm